

याकूब

1 यह ख़त अल्लाह और ख़ुदावंद ईसा मसीह के ख़ादिम याकूब की तरफ़ से है।
ग़ैरयहूदी कौमों में बिखरे हुए बारह इसराईली कबीलों को सलाम।

ईमान और हिकमत

2 मेरे भाइयो, जब आपको तरह तरह की आजमाइशों का सामना करना पड़े तो अपने आपको ख़ुशकिसमत समझें,

3 क्योंकि आप जानते हैं कि आपके ईमान के आजमाए जाने से साबितकदमी पैदा होती है।

4 चुनौचे साबितकदमी को बढ़ने दें, क्योंकि जब वह तकमील तक पहुँचेगी तो आप बालिग़ और कामिल बन जाएंगे, और आपमें कोई भी कमी नहीं पाई जाएगी।

5 लेकिन अगर आपमें से किसी में हिकमत की कमी हो तो अल्लाह से माँगे जो सबको फ़ैयाज़ी से और बग़ैर झिड़की दिए देता है। वह ज़रूर आपको हिकमत देगा।

6 लेकिन अपनी गुज़ारिश ईमान के साथ पेश करें और शक न करें, क्योंकि शक करनेवाला समुंदर की मौज की मानिंद होता है जो हवा से इधर-उधर उछलती बहती जाती है।

7 ऐसा शख्स न समझे कि मुझे ख़ुदावंद से कुछ मिलेगा,

8 क्योंकि वह दोदिला और अपने हर काम में ग़ैरमुस्तक़िलमिज़ाज है।

गुरबत और दौलत

9 पस्तहाल भाई मसीह में अपने ऊँचे मरतबे पर फ़ख़र करे

10 जबकि दौलतमंद शख्स अपने अदना मरतबे पर फ़ख़र करे, क्योंकि वह जंगली फूल की तरह जल्द ही जाता रहेगा।

11 जब सूरज तुलू होता है तो उस की झुलसा देनेवाली धूप में पौदा मुरझा जाता, उसका फूल गिर जाता और उस की तमाम ख़ूबसूरती ख़त्म हो जाती है। उस तरह दौलतमंद शख्स भी काम करते करते मुरझा जाएगा।

आज़माइश

12 मुबारक है वह जो आजमाइश के वक्त साबितकदम रहता है, क्योंकि कायम रहने पर उसे जिंदगी का वह ताज मिलेगा जिसका वादा अल्लाह ने उनसे किया है जो उससे मुहब्बत रखते हैं।

13 आजमाइश के वक्त कोई न कहे कि अल्लाह मुझे आजमाइश में फँसा रहा है। न तो अल्लाह को बुराई से आजमाइश में फँसाया जा सकता है, न वह किसी को फँसाता है।

14 बल्कि हर एक की अपनी बुरी खाहिशात उसे खींचकर और उकसाकर आजमाइश में फँसा देती है।

15 फिर यह खाहिशात हामिला होकर गुनाह को जन्म देती है और गुनाह बालिग होकर मौत को जन्म देता है।

16 मेरे अज़ीज़ भाइयो, फ़रेब मत खाना!

17 हर अच्छी नेमत और हर अच्छा तोहफ़ा आसमान से नाज़िल होता है, नूरों के बाप से, जिसमें न कभी तबदीली आती है, न बदलते हुए सायों की-सी हालत पाई जाती है।

18 उसी ने अपनी मरज़ी से हमें सच्चाई के कलाम के वसीले से पैदा किया। यों हम एक तरह से उस की तमाम मख़लूकात का पहला फल हैं।

सुनना काफ़ी नहीं है

19 मेरे अज़ीज़ भाइयो, इसका खयाल रखना, हर शख्स सुनने में तेज़ हो, लेकिन बोलने और गुस्सा करने में धीमा।

20 क्योंकि इनसान का गुस्सा वह रास्तबाज़ी पैदा नहीं करता जो अल्लाह चाहता है।

21 चुनौचे अपनी जिंदगी की गंदी आदतें और शरीर चाल-चलन दूर करके हलीमी से कलामे-मुक़द्दस का वह बीज क़बूल करें जो आपके अंदर बोया गया है, क्योंकि यही आपको नजात दे सकता है।

22 कलामे-मुक़द्दस को न सिर्फ़ सुनें बल्कि उस पर अमल भी करें, वरना आप अपने आपको फ़रेब देंगे।

23 जो कलाम को सुनकर उस पर अमल नहीं करता वह उस आदमी की मानिंद है जो आईने में अपने चेहरे पर नज़र डालता है।

24 अपने आपको देखकर वह चला जाता है और फ़ौरन भूल जाता है कि मैंने क्या कुछ देखा।

25 इसकी निसबत वह सुबारक है जो आज़ाद करनेवाली कामिल शरीअत में गौर से नज़र डालकर उसमें क्रायम रहता है और उसे सुनने के बाद नहीं भूलता बल्कि उस पर अमल करता है।

26 क्या आप अपने आपको दीनदार समझते हैं? अगर आप अपनी ज़बान पर काबू नहीं रख सकते तो आप अपने आपको फ़रेब देते हैं। फिर आपकी दीनदारी का इज़हार बेकार है।

27 खुदा बाप की नज़र में दीनदारी का पाक और बेदाग़ इज़हार यह है, यतीमों और बेवाओं की देख-भाल करना जब वह मुसीबत में हों और अपने आपको दुनिया की आलूदगी से बचाए रखना।

2

तास्सुब से खबरदार

1 मेरे भाइयो, लाज़िम है कि आप जो हमारे जलाली खुदावंद ईसा मसीह पर ईमान रखते हैं जानिबदारी न दिखाएँ।

2 फ़र्ज़ करें कि एक आदमी सोने की अंगूठी और शानदार कपड़े पहने हुए आपकी जमात में आ जाए और साथ साथ एक गरीब आदमी भी मैले-कुचैले कपड़े पहने हुए अंदर आए।

3 और आप शानदार कपड़े पहने हुए आदमी पर खास ध्यान देकर उससे कहें, “यहाँ इस अच्छी कुरसी पर तशरीफ़ रखें,” लेकिन गरीब आदमी को कहें, “वहाँ खड़ा हो जा” या “आ, मेरे पाँवों के पास फ़र्श पर बैठ जा।”

4 क्या आप ऐसा करने से मुजरिमाना खयालातवाले मुंसिफ़ नहीं साबित हुए? क्योंकि आपने लोगों में नारवा फ़रक़ किया है।

5 मेरे अज़ीज़ भाइयो, सुनो! क्या अल्लाह ने उन्हें नहीं चुना जो दुनिया की नज़र में गरीब हैं ताकि वह ईमान में दौलतमंद हो जाएँ? यही लोग वह बादशाही मीरास में पाएँगे जिसका वादा अल्लाह ने उनसे किया है जो उसे प्यार करते हैं।

6 लेकिन आपने ज़रूरतमंदों की बेइज़्जती की है। ज़रा सोच लें, वह कौन हैं जो आपको दबाते और अदालत में घसीटकर ले जाते हैं? क्या यह दौलतमंद ही नहीं हैं?

7 वही तो ईसा पर कुफ़र बकते हैं, उस अज़ीम नाम पर जिसके पैरोकार आप बन गए हैं।

8 अल्लाह चाहता है कि आप कलामे-मुकद्दस में मज़कूर शाही शरीअत पूरी करें, “अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है।”

9 चुनौचे जब आप जानिबदारी दिखाते हैं तो गुनाह करते हैं और शरीअत आपको मुजरिम ठहराती है।

10 मत भूलना कि जिसने शरीअत का सिर्फ़ एक हुक्म तोड़ा है वह पूरी शरीअत का कुसूरवार ठहरता है।

11 क्योंकि जिसने फ़रमाया, “ज़िना न करना” उसने यह भी कहा, “क़त्ल न करना।” हो सकता है कि आपने ज़िना तो न किया हो, लेकिन किसी को क़त्ल किया हो। तो भी आप उस एक जुर्म की वजह से पूरी शरीअत तोड़ने के मुजरिम बन गए हैं।

12 चुनौचे जो कुछ भी आप कहते और करते हैं याद रखें कि आज़ाद करनेवाली शरीअत आपकी अदालत करेगी।

13 क्योंकि अल्लाह अदालत करते वक़्त उस पर रहम नहीं करेगा जिसने खुद रहम नहीं दिखाया। लेकिन रहम अदालत पर ग़ालिब आ जाता है। जब आप रहम करेंगे तो अल्लाह आप पर रहम करेगा।

ईमान नेक कामों के बग़ैर मुरदा है

14 मेरे भाइयो, अगर कोई ईमान रखने का दावा करे, लेकिन उसके मुताबिक़ ज़िंदगी न गुज़ारे तो उसका क्या फ़ायदा है? क्या ऐसा ईमान उसे नजात दिला सकता है?

15 फ़र्ज़ करें कि कोई भाई या बहन कपड़ों और रोज़मर्रा रोटी की ज़रूरतमंद हो।

16 यह देखकर आपमें से कोई उससे कहे, “अच्छा जी, खुदा हाफ़िज़। गरम कपड़े पहनो और जी भरकर खाना खाओ।” लेकिन वह खुद यह ज़रूरियात पूरी करने में मदद न करे। क्या इसका कोई फ़ायदा है?

17 गरज़, महज़ ईमान काफ़ी नहीं। अगर वह नेक कामों से अमल में न लाया जाए तो वह मुरदा है।

18 हो सकता है कोई एतराज़ करे, “एक शख्स के पास तो ईमान होता है, दूसरे के पास नेक काम।” आँ, मुझे दिखाएँ कि आप नेक कामों के बग़ैर किस तरह ईमान रख सकते हैं। यह तो नामुमकिन है। लेकिन मैं ज़रूर आपको अपने नेक कामों से दिखा सकता हूँ कि मैं ईमान रखता हूँ।

19 अच्छा, आप कहते हैं, “हम ईमान रखते हैं कि एक ही खुदा है।” शाबाश, यह बिलकुल सहीह है। शयातीन भी यह ईमान रखते हैं, गो वह यह जानकर खौफ के मारे थरथराते हैं।

20 होश में आएँ! क्या आप नहीं समझते कि नेक आमाल के बगैर ईमान बेकार है?

21 हमारे बाप इब्राहीम पर गौर करें। वह तो इसी वजह से रास्तबाज़ ठहराया गया कि उसने अपने बेटे इसहाक को कुरबानगाह पर पेश किया।

22 आप खुद देख सकते हैं कि उसका ईमान और नेक काम मिलकर अमल कर रहे थे। उसका ईमान तो उससे मुकम्मल हुआ जो कुछ उसने किया

23 और इस तरह ही कलामे-मुकद्दस की यह बात पूरी हुई, “इब्राहीम ने अल्लाह पर भरोसा रखा। इस बिना पर अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ करार दिया।” इसी वजह से वह “अल्लाह का दोस्त” कहलाया।

24 यों आप खुद देख सकते हैं कि इनसान अपने नेक आमाल की बिना पर रास्तबाज़ करार दिया जाता है, न कि सिर्फ ईमान रखने की वजह से।

25 राहब फ़ाहिशा की मिसाल भी लें। उसे भी अपने कामों की बिना पर रास्तबाज़ करार दिया गया जब उसने इसराईली जासूसों की मेहमान-नवाज़ी की और उन्हें शहर से निकलने का दूसरा रास्ता दिखाकर बचाया।

26 गरज़, जिस तरह बदन रूह के बगैर मुरदा है उसी तरह ईमान भी नेक आमाल के बगैर मुरदा है।

3

ज़बान

1 मेरे भाइयो, आपको से ज्यादा उस्ताद न बनें। आपको मालूम है कि हम उस्तादों की ज़्यादा सख्ती से अदालत की जाएगी।

2 हम सबसे तो कई तरह की गलतियाँ सरज़द होती हैं। लेकिन जिस शख्स से बोलने में कभी गलती नहीं होती वह कामिल है और अपने पूरे बदन को काबू में रखने के काबिल है।

3 हम घोड़े के मुँह में लगाम का दहाना रख देते हैं ताकि वह हमारे हुकम पर चले, और इस तरह हम अपनी मरज़ी से उसका पूरा जिस्म चला लेते हैं।

4 या बादबानी जहाज़ की मिसाल लें। जितना भी बड़ा वह हो और जितनी भी तेज़ हवा चलती हो नाखुदा एक छोटी-सी पतवार के ज़रीए उसका सूख ठीक रखता है। यों ही वह उसे अपनी मरज़ी से चला लेता है।

5 इसी तरह ज़बान एक छोटा-सा अजू है, लेकिन वह बड़ी बड़ी बातें करती है।

देखें, एक बड़े जंगल को भस्म करने के लिए एक ही चिंगारी काफ़ी होती है।

6 ज़बान भी आग की मानिंद है। बदन के दीगर आज्ञा के दरमियान रहकर उसमें नारास्ती की पूरी दुनिया पाई जाती है। वह पूरे बदन को आलूदा कर देती है, हाँ इनसान की पूरी जिंदगी को आग लगा देती है, क्योंकि वह खुद जहन्नुम की आग से सुलगाई गई है।

7 देखें, इनसान हर किसिम के जानवरों पर क्राबू पा लेता है और उसने ऐसा किया भी है, खाह जंगली जानवर हों या परिदे, रेंगनेवाले हों या समुंदरी जानवर।

8 लेकिन ज़बान पर कोई क्राबू नहीं पा सकता, इस बेताब और शरीर चीज़ पर जो मोहलक ज़हर से लबालब भरी है।

9 ज़बान से हम अपने खुदावंद और बाप की सताइश भी करते हैं और दूसरों पर लानत भी भेजते हैं, जिन्हें अल्लाह की सूरत पर बनाया गया है।

10 एक ही मुँह से सताइश और लानत निकलती है। मेरे भाइयो, ऐसा नहीं होना चाहिए।

11 यह कैसे हो सकता है कि एक ही चश्मे से मीठा और कड़वा पानी फूट निकले।

12 मेरे भाइयो, क्या अंजीर के दरख्त पर जैतून लग सकते हैं या अंगूर की बेल पर अंजीर? हरगिज़ नहीं! इसी तरह नमकीन चश्मे से मीठा पानी नहीं निकल सकता।

आसमान से हिकमत

13 क्या आपमें से कोई दाना और समझदार है? वह यह बात अपने अच्छे चाल-चलन से ज़ाहिर करे, हिकमत से पैदा होनेवाली हलीमी के नेक कामों से।

14 लेकिन खबरदार! अगर आप दिल में हसद की कड़वाहट और खुदगर्ज़ी पाल रहे हैं तो इस पर शेखी मत मारना, न सच्चाई के खिलाफ झूट बोलें।

15 ऐसा फ़खर आसमान की तरफ़ से नहीं है, बल्कि दुनियावी, गैररूहानी और इबलीस से है।

16 क्योंकि जहाँ हसद और खुदगरजी है वहाँ फ़साद और हर शरीर काम पाया जाता है।

17 आसमान की हिकमत फ़रक है। अब्वल तो वह पाक और मुक़द्दस है। नीज़ वह अमनपसंद, नरमादिल, फ़रमाँबरदार, रहम और अच्छे फल से भरी हुई, ग़ैरजानिबदार और खुलूसदिल है।

18 और जो सुलह कराते हैं उनके लिए रास्तबाज़ी का फल सलामती से बोया जाता है।

4

दुनिया से दोस्ती

1 यह लड़ाइयाँ और झगड़े जो आपके दरमियान हैं कहाँ से आते हैं? क्या इनका सरचश्मा वह बुरी ख़ाहिशात नहीं जो आपके आज्ञा में लड़ती रहती हैं?

2 आप किसी चीज़ की ख़ाहिश रखते हैं, लेकिन उसे हासिल नहीं कर सकते। आप क़त्ल और हसद करते हैं, लेकिन जो कुछ आप चाहते हैं वह पा नहीं सकते। आप झगड़ते और लड़ते हैं। तो भी आपके पास कुछ नहीं है, क्योंकि आप अल्लाह से माँगते नहीं।

3 और जब आप माँगते हैं तो आपको कुछ नहीं मिलता। वजह यह है कि आप ग़लत नीयत से माँगते हैं। आप इससे अपनी खुदगरज़ ख़ाहिशात पूरी करना चाहते हैं।

4 बेवफ़ा लोगो! क्या आपको नहीं मालूम कि दुनिया का दोस्त अल्लाह का दुश्मन होता है? जो दुनिया का दोस्त बनना चाहता है वह अल्लाह का दुश्मन बन जाता है।

5 या क्या आप समझते हैं कि कलामे-मुक़द्दस की यह बात बेतुकी-सी है कि अल्लाह ग़ैरत से उस रूह का आरज़ूमंद है जिसको उसने हमारे अंदर सुकूनत करने दिया?

6 लेकिन वह हमें इससे कहीं ज़्यादा फ़ज़ल बरख़्शाता है। कलामे-मुक़द्दस यों फ़रमाता है, “अल्लाह मग़स्रों का मुक़ाबला करता लेकिन फ़रोतनों पर मेहरबानी करता है।”

7 गरज़, अल्लाह के ताबे हो जाँ। इबलीस का मुक़ाबला करें तो वह भाग जाएगा।

8 अल्लाह के करीब आ जाएँ तो वह आपके करीब आएगा। गुनाहगारो, अपने हाथों को पाक-साफ करें। दोदिलो, अपने दिलों को मखसूसो-मुकद्दस करें।

9 अफसोस करें, मातम करें, खूब रोएँ। आपकी हँसी मातम में बदल जाए और आपकी खुशी मायूसी में।

10 अपने आपको खुदावंद के सामने नीचा करें तो वह आपको सरफराज करेगा।

एक दूसरे का मुंसिफ मत बनना

11 भाइयो, एक दूसरे पर तोहमत मत लगाना। जो अपने भाई पर तोहमत लगाता या उसे मुजरिम ठहराता है वह शरीअत पर तोहमत लगाता है और शरीअत को मुजरिम ठहराता है। और जब आप शरीअत पर तोहमत लगाते हैं तो आप उसके पैरोकार नहीं रहते बल्कि उसके मुंसिफ बन गए हैं।

12 शरीअत देनेवाला और मुंसिफ सिर्फ एक ही है और वह है अल्लाह जो नजात देने और हलाक करने के काबिल है। तो फिर आप कौन हैं जो अपने आपको मुंसिफ समझकर अपने पड़ोसी को मुजरिम ठहरा रहे हैं!

शेखी मत मारना

13 और अब मेरी बात सुनें, आप जो कहते हैं, “आज या कल हम फुल्लों फुल्लों शहर में जाएंगे। वहाँ हम एक साल ठहरकर कारोबार करके पैसे कमाएँगे।”

14 देखें, आप यह भी नहीं जानते कि कल क्या होगा। आपकी ज़िंदगी चीज़ ही किया है! आप भाप ही हैं जो थोड़ी देर के लिए नज़र आती, फिर गायब हो जाती है।

15 बल्कि आपको यह कहना चाहिए, “अगर खुदावंद की मरज़ी हुई तो हम जिएँगे और यह या वह करेंगे।”

16 लेकिन फिलहाल आप शेखी मारकर अपने गुस्स का इज़हार करते हैं। इस क्रिस्म की तमाम शेखीबाज़ी बुरी है।

17 चुनौचे जो जानता है कि उसे क्या क्या नेक काम करना है, लेकिन फिर भी कुछ नहीं करता वह गुनाह करता है।

5

दौलतमंदो, खबरदार!

- 1 दौलतमंदो, अब मेरी बात सुनें! खूब रोएँ और गिर्याओ-जारी करें, क्योंकि आप पर मुसीबत आनेवाली है।
- 2 आपकी दौलत सड़ गई है और कीड़े आपके शानदार कपड़े खा गए हैं।
- 3 आपके सोने और चाँदी को जंग लग गया है। और उनकी जंगआलूदा हालत आपके खिलाफ गवाही देगी और आपके जिस्मों को आग की तरह खा जाएगी। क्योंकि आपने इन आखिरी दिनों में अपने लिए खजाने जमा कर लिए हैं।
- 4 देखें, जो मजदूरी आपने फ़सल की कटाई करनेवालों से बाज़ रखी है वह आपके खिलाफ चिल्ला रही है। और आपकी फ़सल जमा करनेवालों की चीखें आसमानी लशकरों के रब के कानों तक पहुँच गई हैं।
- 5 आपने दुनिया में ऐयाशी और ऐशो-इशरत की जिंदगी गुजारी है। ज़बह के दिन आपने अपने आपको मोटा-ताज़ा कर दिया है।
- 6 आपने रास्तबाज़ को मुजरिम ठहराकर कत्ल किया है, और उसने आपका मुकाबला नहीं किया।

सब्र और दुआ

- 7 भाइयो, अब सब्र से खुदावंद की आमद के इंतज़ार में रहें। किसान पर गौर करें जो इस इंतज़ार में रहता है कि ज़मीन अपनी क्रीमती फ़सल पैदा करे। वह कितने सब्र से खरीफ और बहार की बारिशों का इंतज़ार करता है!
- 8 आप भी सब्र करें और अपने दिलों को मज़बूत रखें, क्योंकि खुदावंद की आमद करीब आ गई है।
- 9 भाइयो, एक दूसरे पर मत बुडबुडाना, वरना आपकी अदालत की जाएगी। मुंसिफ़ तो दरवाज़े पर खड़ा है।
- 10 भाइयो, उन नबियों के नमूने पर चलें जिन्होंने रब के नाम में कलाम पेश करके सब्र से दुख उठाया।
- 11 देखें, हम उन्हें मुबारक कहते हैं जो सब्र से दुख बरदाश्त करते थे। आपने अय्यूब की साबितक़दमी के बारे में सुना है और यह भी देख लिया कि रब ने आखिर में क्या कुछ किया, क्योंकि रब बहुत मेहरबान और रहीम है।
- 12 मेरे भाइयो, सबसे बढ़कर यह कि आप कसम न खाएँ, न आसमान की कसम, न ज़मीन की, न किसी और चीज़ की। जब आप “हाँ” कहना चाहते हैं

तो बस “हाँ” ही काफ़ी है। और अगर इनकार करना चाहें तो बस “नहीं” कहना काफ़ी है, वरना आप मुजरिम ठहरेंगे।

13 क्या आपमें से कोई मुसीबत में फँसा हुआ है? वह दुआ करे। क्या कोई खुश है? वह सताइश के गीत गाए।

14 क्या आपमें से कोई बीमार है? वह जमात के बुजुर्गों को बुलाए ताकि वह आकर उसके लिए दुआ करें और खुदावंद के नाम में उस पर तेल मलें।

15 फिर ईमान से की गई दुआ मरीज़ को बचाएगी और खुदावंद उसे उठा खड़ा करेगा। और अगर उसने गुनाह किया हो तो उसे मुआफ़ किया जाएगा।

16 चुनौचे एक दूसरे के सामने अपने गुनाहों का इकरार करें और एक दूसरे के लिए दुआ करें ताकि आप शफ़ा पाएँ। रास्त शख्स की मुअस्सिर दुआ से बहुत कुछ हो सकता है।

17 इलियास हम जैसा इनसान था। लेकिन जब उसने ज़ोर से दुआ की कि बारिश न हो तो साढ़े तीन साल तक बारिश न हुई।

18 फिर उसने दुबारा दुआ की तो आसमान ने बारिश अता की और ज़मीन ने अपनी फ़सलें पैदा की।

19 मेरे भाइयो, अगर आपमें से कोई सच्चाई से भटक जाए और कोई उसे सहीह राह पर वापस लाए

20 तो यकीन जानें, जो किसी गुनाहगार को उस की गलत राह से वापस लाता है वह उस की जान को मौत से बचाएगा और गुनाहों की बड़ी तादाद को छुपा देगा।

किताबे-मुकदस

**The Holy Bible in the Urdu language, Urdu Geo
Version, Hindi Script**

Copyright © 2019 Urdu Geo Version

Language: उर्दू (Urdu)

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution-Noncommercial-No Derivatives license 4.0.

You may share and redistribute this Bible translation or extracts from it in any format, provided that:

You include the above copyright and source information.

You do not sell this work for a profit.

You do not change any of the words or punctuation of the Scriptures.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.

2024-09-20

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 1 Jul 2025 from source files dated 20 Sep 2024

a1ee0020-7263-5fce-8289-9d7a7ac2d299